

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमास्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये अरण्यकाण्डे
॥ तृतीयः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बुणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ तृतीयः सर्गः ॥

रिराधश्रीरामसंरादः श्रीरामेण सलम्बुणेन रिराधस्योपरि प्रहरणं
रिराधस्य तौ द्वारपि दातरौ गृहीत्रा रनान्तरे गमनम्

अथोराच पुनर्वाक्यं रिराधः पूरयन् रनम्।
पृच्छतो मम हि ब्रूतं कौ युवां क्व गमिष्यथः ॥ 3.3.1 ॥

तमुराच ततो रामो राम्बसं ज्वलिताननम्।
पृच्छन्तं सुमहातेजा इम्ब्राकुकुलमात्मनः ॥ 3.3.2 ॥

म्ब्रियौ ब्रूतसम्पन्नौ रिद्धि नौ रनगोचरौ।
त्रां तु रेदितुमिच्छारः कम्बुं चरसि दणुकान् ॥ 3.3.3 ॥

तमुराच रिराधस्तु रामं सत्यपराक्रमम्।
हन्तु रम्ब्यामि ते राजन् निबोध मम राघर ॥ 3.3.4 ॥

पुत्रः किल जरस्याहं माता मम शतहृदा।
रिराध इति मामाहः पृथिर्यां सर्रराम्बसाः ॥ 3.3.5 ॥

तपसा चाडिसम्प्राप्ता ब्रम्बणो हि प्रसादजा।
शम्ब्रेणारध्याता लोकेहृच्छेद्याडेद्यात्रमेर च ॥ 3.3.6 ॥

उत्सृज्य प्रमदामेनामनपेम्बे यथागतम्।
त्ररमाणौ पलायेथां न रां जीरितमाददे ॥ 3.3.7 ॥

তং রামঃ প্রতুরাচেদং কোপসংরক্তলোচনঃ।
রাক্ষসং রিকৃতাকারং রিরাধং পাপচেতসম্ ॥ 3.3.8 ॥

ক্ষুদ্র ধিক্ ত্বরাং তু হীনার্থং মৃত্যুমন্বেষসে ধ্রুৱম্।
রণে প্রাক্ষ্যসি সন্তিষ্ঠ ন মে জীরন্ রিমোক্ষ্যসে ॥ 3.3.9 ॥

ততঃ সজ্যং ধনুঃ কৃৎরা রামঃ সুনিশিতাঞ্শরান্।
সুশীঘ্রমভিসন্ধায় রাক্ষসং নিজঘান হ ॥ 3.3.10 ॥

ধনুষা জ্যাগুণরতা সপ্ত বাণান্ মুমোচ হ।
রুক্ষপুঙ্খান্ মহারেগান্ সুপর্ণানিলতুল্যগান্ ॥ 3.3.11 ॥

তে শরীরং রিরাধস্য ভিত্ত্বা বর্হিণরাসসঃ।
নিপেতুঃ শোণিতাদিঙ্কা ধরণ্যাং পারকোপমাঃ ॥ 3.3.12 ॥

স রিক্কো ন্যস্য রৈদেহীং শূলমুদ্যম্য রাক্ষসঃ।
অভ্যদ্রৱং সুসঙ্কুদ্ধস্তদা রামং সলক্ষ্মণম্ ॥ 3.3.13 ॥

স রিনদ্য মহানাদং শূলং শক্রধ্রজোপমম্।
প্রগৃহ্যাশোভত তদা র্যাত্তানন ইরান্তকঃ ॥ 3.3.14 ॥

অথ তৌ ভ্রাতরৌ দীপ্তং শরৱর্ষং ৱর্ষতুঃ।
রিরাধে রাক্ষসে তস্মিন্ কালান্তকযমোপমে ॥ 3.3.15 ॥

স প্রহস্য মহারৌদ্রঃ স্থিৎরাজৃস্তত রাক্ষসঃ।
জৃম্ভমাণস্য তে বাণাঃ কাযান্নিপেতুরাশুগাঃ ॥ 3.3.16 ॥

স্পর্শাৎ তু ৱরদানেন প্রাণান্ সংরোধ্য রাক্ষসঃ।
রিরাধঃ শূলমুদ্যম্য রাঘৱারভ্যধারত ॥ 3.3.17 ॥

তচ্ছূলং ৱজ্রসঙ্কাসং গগনে জ্বলনোপমম্।
দ্বাভ্যাং শরাভ্যাং চিচ্ছেদ রামঃ শস্ত্রভৃতাং ৱরঃ ॥ 3.3.18 ॥

তদ্ রামরিশিখৈশ্চিন্নং শূলং তস্যাপতদ্ ভুরি।
পপাতাশনিনা ছিন্নং মেরোরির শিলাতলম্ ॥ 3.3.19 ॥

তৌ খড্গৌ ক্ষিপ্ৰমুদ্যম্য কৃষ্ণসর্পারিরোদ্যতো।
তূর্ণমাপেততুস্তস্য তদা প্রহরতাং বলাৎ ॥ 3.3.20 ॥

স রধ্যমানঃ সুভৃশং ভুজাভ্যাং পরিগৃহ্য তৌ।
অপ্রকম্প্যৌ নরর্যাঘৌ রৌদ্রঃ প্রস্থাতুমৈচ্ছত ॥ 3.3.21 ॥

তস্যাভিপ্রাযমাজ্জায রামো লক্ষ্মণমব্রবীৎ।
রহৎরযমলং তারং পথানেন তু রাক্ষসঃ ॥ 3.3.22 ॥

যথা চেচ্ছতি সৌমিত্রে তথা রহতু রাক্ষসঃ।
অযমের হি নঃ পস্থা যেন যাতি নিশাচরঃ ॥ 3.3.23 ॥

স তু স্ববলরীর্যেণ সমুৎক্ষিপ্য নিশাচরঃ।
বালারির ঙ্কঙ্কগতৌ চকারাতিবলোদ্ধতঃ ॥ 3.3.24 ॥

তারারোপ্য ততঃ ঙ্কঙ্কং রাঘরৌ রজনীচরঃ।
রিরোধো রিনদন্ ঘোরং জগামাভিমুখো রনম্ ॥ 3.3.25 ॥

রনং মহামেঘনিভং প্ররিষ্টৌ
দ্রুমৈর্মহদ্ভির্রিধৈরুপেতম্।
নানারিধৈঃ পক্ষিকুলৈর্রিচিত্রং
শিরাযুতং র্যালমৃগৈর্রিকীর্ণম্ ॥ 3.3.26 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রাল্মীকীয়ে আদিকাৰ্যে অরণ্যকাণ্ডে তৃতীয়ঃ সর্গঃ ॥